वैदिकेपिकर्मणिराजसंतामसंकामकोथादिहेनुकंत्याज्यंसात्विकंसेव्यमित्याहश्लोकत्रयेण रजसेति अधर्मेतिच्छेदः लौकिकंतुराजसंतामसंचकर्मम्रतरात्याज्यमितिभादः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ सात्विकं मृमुसूणांपथ्यिमत्यर्थः ॥ ३३ ॥ इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मपर्वणिनेलकंठीयेभारतभावदीपेद्वादशाधिकद्विशततमोऽभ्यायः ॥ २१२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९

रजसाऽधम्युक्तानिकार्याण्यिपसमाप्तते॥ अर्थयुक्तानिचात्यर्थकामान्सर्वाश्चसेवते॥ ३१॥ तमसालोभयुक्तानिकोधजानिचसेवते॥ हिंसाविहाराभिर तसंद्रीनिद्रासमन्वतः॥ ३२॥ सत्वस्थःसात्विकान्भावान्शुद्धात्यस्वितंशितः॥ सदेहीविमलःश्रीमान्श्चद्वाविद्यासमन्वतः॥ ३३॥ इतिश्रीमहाभा रतेशांति०मोक्ष० वार्ष्णयाध्यात्मकथनेहादशाधिकिहशततमोऽध्यायः॥ २१२॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ भीष्मउवाच रजसासाध्यतेमोहस्तमसा भरतर्षभाकोधलोभोभयंदर्पएतेषांसादनान्छुचिः॥१॥ परमंपरमात्मानंदेवमक्षयमव्ययं॥ विष्णुमव्यकसंस्थानंविद्धस्तंदेवसत्तमं॥२॥ तस्यमायापिनद्धां गानष्टज्ञानाविचेतसः॥ मानवाज्ञानसंमोहात्ततःकोधंप्रयांतिवे॥३॥ कोधात्काममवाप्याथलोभमोहोचमानवाः॥ मानदर्पावहंकारमहंकारात्ततःक्रियाः॥ ४॥ श्वाक्षाभिक्षत्रहेष्यस्त्रहेष्वर्यात्रहेष्यस्त्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्यस्त्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्वर्यात्रहेष्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्तर्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्तरस्तिकेष्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्त्रविद्यस्तिकेष्यस्तिकेष्यस्तिकेष्यस्

आत्मानंप्रत्यंचं परमात्मानमात्मानमितिपाठांतरंस्पष्टार्थं अक्षयंनाशहीनंअञ्ययंद्धासहीनंबिदुःपाञ्चः शुचयइति इदानीतनोपिशुचिविदतीत्यर्थः ॥ २ ॥ पिनद्धांगाह्मपादिभिर्जबीकतेदियाः अतएवनष्टज्ञा नाः ततोविचेतसःनिर्विवेकाः ज्ञानसंमोहात्बुद्धिवेक्कव्यात् ब्रह्माज्ञानाद्वा क्रोधंविक्षिप्तचित्ततां ॥३॥ मानःआत्मिनपूज्यताबुद्धिः दर्पःउच्वंखलत्वं अहंकारःपरेषांतुच्छीकरणं ॥ ४॥ जन्माजन्मकतक्षणाः जन्ममरणयोःकतस्वीकाराः ॥५॥६॥ तैःकोधादिभिः बद्धस्तान्अभितःपरिष्ठवन्तर्नुमिच्छन् हेतौशतुप्रत्ययः प्रथमंयोषितोहेयत्वेनजानीयात् यतस्ताःसंसारपटस्यतंत्रमिवतंत्रंतंतुवितानंतंतुवायबद्धहंति॥७॥ यथाप्रकतिःक्षेत्रज्ञंबन्नाति एवमेताअपत्योत्पत्तिक्षेत्रभूताःजीवंबभंतीत्यर्थः अतीयात्अतिकामेत् संन्यसेदित्यर्थः नचाभीयुरितिपाठेनानुसरेयुरित्यर्थः ॥ ८ ॥